

-
- HOME
 - WOMEN WITH DIFFERENCE
 - BUSINESS WOMEN ▾
 - EDUCATION
 - OUR FUTURE
 - NEWS
 - VIDEOS
 - CONTACT

बैंकर की नौकरी छोड़ आदिवासी बच्चों का भविष्य सवांरने में जुटा चार्टेड अकाउंटेंट

GEETA on January 13, 2017

 Facebook  Twitter  Google+

कोलकाता में उन्होंने पढ़ाई की, पेशा उनका चार्टर्ड अकाउंटेंट (Chartered Accountant) का था, काम उन्होंने बैंकर के तौर पर किया और नौकरी उन्होंने मुंबई में की। उस शख्स ने जब अपने आसपास शिक्षा की बदतर हालत को देखा तो उन्होंने अपनी अच्छी खासी नौकरी को छोड़ आदिवासी और गरीब बच्चों को पढ़ाने का जिम्मा उठाया। पिछले 5 सालों से ऐसे बच्चों को पढ़ा रहे संजय नागर (Sanjay Nagar) फिलहाल करीब ढाई सौ बच्चों को पढ़ाने का जिम्मा उठा रहे हैं। साल के 365 दिन बच्चों को पढ़ाने का वो ये काम अपने संगठन 'कोहका फाउंडेशन' (Kohka Foundation) के जरिये कर रहे हैं। उनकी इस कोशिश से जहां आदिवासी बच्चों के रिजल्ट में सुधार आया है, वहीं ऐसे बच्चों की संख्या भी कम हुई है जो कई कारणों से बीच में ही स्कूल छोड़ देते थे।



मध्य प्रदेश के सिवनी जिले (Seoni district in Madhya Pradesh) के तुरिया (Turiya village) और अम्बाझरी (Ambajhari village) में बच्चों को पढ़ाने का काम कर रहे संजय नागर कभी अमेरिकन एक्सप्रेस बैंक के लिये काम करते थे। करीब 20 सालों तक बैंकर के तौर पर काम करने दौरान उनको जब भी वक्त मिलता तो वो महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश की सीमा से सटे पेंच टाइगर रिजर्व के घाट घूमने के लिये निकल जाते थे। पेंच एक आदिवासी इलाका है यहां पर ज्यादातर गोंड जनजाति के लोग रहते हैं। यहां पर काफी सारे रिजार्ट बने हुए हैं और संजय अक्सर जिस रिजार्ट पर रुकते था उसके करीब एक मिडिल स्कूल था जहां पर पढ़ाई का स्तर काफी खराब था। इस वजह से 9वीं कक्षा तक पहुंचते ही काफी बच्चे स्कूल छोड़ देते थे। तब संजय ने सोचा कि क्यों ना वालंटियर के तौर पर इन बच्चों को पढ़ाने का काम किया जाये और उन्होंने आदिवासी बच्चों को अंग्रेजी और गणित पढ़ाने का काम शुरू किया। साथ ही वो बच्चों को स्टेशनरी, जूते और ड्रेस आदि में भी मदद करने लगे। शुरूआत में ये खर्च करीब 5 हजार रुपये महीने आता था जो कि दो तीन साल में बढ़ते बढ़ते 50 से 60 हजार रुपये महीने हो गया। जिसके बाद संजय ने साल 2011 में अपनी बैंक की नौकरी छोड़ने का फैसला किया और पेंच में रहकर कोहका फाउंडेशन (Kohka Foundation) की स्थापना की। संजय ने इंडिया मंत्र को बताया कि

मुझे इस काम के लिए मुंबई की एक संस्था 'लाइट ऑफ लाइफ ट्रस्ट' (Light of Life Trust) ने सैकेंडरी एजुकेशन के लिए फंडिंग दी। ये संस्था पूरे महाराष्ट्र में इस तरह का काम करने वालों को फंड मुहैया कराती है।



संजय ने इस काम को शुरू करने से पहले पेंच और उसके आसपास के गांवों में रिसर्च कर ये जानने की कोशिश की कि क्यों यहां के बच्चे 8वीं और 9वीं के बाद स्कूल छोड़ देते हैं। जिसके बाद उनको पता चला कि सरकार की 8वीं तक फेल ना करने की नीति के कारण ना तो बच्चे मन लगाकर पढ़ते हैं और टीचर भी बच्चों की पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान नहीं देते। इस कारण जो बच्चे पढ़ना चाहते हैं वो इसलिए फेल हो जाते हैं क्योंकि उनको कुछ आता नहीं खास तौर पर अंग्रेजी और गणित जैसे विषयों में। रिसर्च और फंड मिलने के बाद संजय ने 5 टीचर नियुक्त किये जो 8वीं से 10वीं तक के बच्चों को अंग्रेजी और गणित पढ़ाते हैं। इसके अलावा उन्होंने 3 सोशल वर्कर भी नियुक्त किये जो बीच में स्कूल छोड़ने वाले बच्चों और उनके माता-पिता को समझाकर उनको वापस स्कूल लाते हैं। इसके अलावा ये सोशल वर्कर बच्चों के माता पिता को उनसे जुड़ी हर गतिविधि की जानकारी भी देते हैं साथ ही वो बच्चों और उनके माता पिता को शिक्षा के महत्व के बारे में भी बताते हैं।



पेंच इलाके में चल रहा ये स्कूल सरकारी है जो सुबह 11 बजे से लगता है। जहां पर कोहका फाउंडेशन (Kohka Foundation) से जुड़े सदस्य सुबह 9 बजे से 11 बजे तक बच्चों को गणित और अंग्रेजी पढ़ाने का काम करते हैं। कोहका फाउंडेशन (Kohka Foundation) की कक्षाएं साल के 365 दिन चलती हैं। रविवार को उनकी कक्षा 4 घंटे की होती है। जो सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक चलती है। संजय बताते हैं कि

हर साल बच्चा जब 9वीं क्लास में आता है तो उसका बेस लाइन टेस्ट लिया जाता है और साल खत्म होने पर उसका एंड लाइन टेस्ट होता है। इसके बाद दोनों टेस्ट की तुलना कर हम बच्चे की पढ़ाई में आने वाले सुधार को देखते हैं कि उसमें साल भर के दौरान कितना सुधार आया है।

पढ़ाई के साथ-साथ कोहका फाउंडेशन (Kohka Foundation) बच्चों को दूसरी कई तरह की गतिविधियां भी कराती हैं। हर शनिवार को फाउंडेशन के सदस्य बच्चों के लिए वर्कशॉप का आयोजन करते हैं। जिसमें बच्चों के लिए अलग-अलग मुद्दे होते हैं। इन मुद्दों में पर्यावरण, परिवार, शिक्षा और समाज के प्रति उनकी जिम्मेदारी के बारे में बात की जाती है। वर्कशॉप में बच्चों के कई ग्रुप बनाये जाते हैं और उनको किसी विषय पर खुद ही बोलना होता है और टीचर उनकी बातों को सुनते हैं और जरूरत पड़ने पर मदद भी करते हैं। वर्कशॉप में ऐसे मुद्दों पर बात की जाती है जिसके बारे में बच्चों और उनके माता पिता को पहले से कुछ भी पता नहीं होता। इस वर्कशॉप में आने से बच्चों का सामान्य ज्ञान तो बढ़ता ही है साथ ही उनके आत्मविश्वास में भी बढ़ोतरी होती है। वर्कशॉप के साथ कोहका फाउंडेशन (Kohka Foundation) हर 3 महीने में पीटीएम का आयोजन करता है। जहां पर फाउंडेशन के सदस्य बच्चों के माता-पिता से उनकी पढ़ाई और दूसरी गतिविधियों के बारे में बात करते हैं।



बच्चों को कम्प्यूटर की बेसिक जानकारी देने के लिए पिछले साल सितम्बर से यहां पर एक कम्प्यूटर सेंटर शुरू किया गया है। इस सेंटर में 8वीं से 12वीं तक के बच्चों को 20 दिन का बेसिक कम्प्यूटर कोर्स कराया जाता है। इसके लिए यहां पर 15 लैपटॉप, 1 प्रोजेक्टर और इन्वर्टर की व्यवस्था की गई है। इन सब लैपटॉप को वाई-फाई से जोड़ा गया है। कोर्स खत्म होने के बाद बच्चों को सर्टिफिकेट भी दिया जाता है। इसके अलावा दूसरे स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे भी कम्प्यूटर की बेसिक जानकारी ले सकें इसके लिये कोहका फाउंडेशन (Kohka Foundation) के सदस्य 25 किलोमीटर के दायरे में आने वाले स्कूलों में लैपटॉप लेकर जाते हैं और वहां के बच्चों को ये कोर्स कराते हैं। कोहका फाउंडेशन (Kohka Foundation) के जरिये संजय नागर की योजना है कि अगले 6 महीनों में वो करीब 1 हजार बच्चों को

कम्प्यूटर का बेसिक कोर्स करा सकें। कोहका फाउंडेशन (Kohka Foundation) आदिवासी लड़कियों (tribal girls) को सेक्स एजुकेशन देने का भी काम करता है। इसके लिए यहां पर नागपुर से डॉक्टर शिल्पा आती हैं। जो साल में दो बार लड़कियों के साथ बैठक करती हैं। संजय बताते हैं कि

यही वजह है कि जो लड़कियां कल तक सिर झुकाकर और नजरें झुकाकर बात करती थीं, वो आज खुलकर डॉक्टर के सामने अपनी उन परेशानियों के बारे में बात करती हैं, जिसके बारे में वो अपने मां से भी बात करने में हिचकती थीं।

आदिवासी बच्चे (tribal children) बेहतर तालिम हासिल करने के अलावा अपने लिये उचित करियर तलाश कर सकें इसके लिये कोहका फाउंडेशन (Kohka Foundation) साल में 2 बार 10वीं और 12वीं के बच्चों के साथ करियर काउंसलिंग का काम करता है। जहां पर बच्चों को कौन सा करियर चुनना चाहिए और किन संस्थाओं में उनको मुफ्त में शिक्षा मिल सकती है, इसके बारे में बताया जाता है।



संजय नागर की इन कोशिशों के बाद यहां पर स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की संख्या में काफी कमी आई है और स्कूल का परीक्षाफल भी पहले की तुलना में सुधरा है। तभी तो आज उनके पढ़ाये हुए कई बच्चे भोपाल और जबलपुर जैसे बड़े शहरों से ग्रेजुएशन की पढ़ाई कर रहे हैं। इनमें लड़कियों की संख्या भी काफी है। खास बात ये है कि कोहका फाउंडेशन की कोशिशों के कारण लड़कियों के स्कूल छोड़ने की संख्या में काफी ज्यादा कमी आई है क्योंकि लड़कियों को डर रहता है कि अगर वो नहीं पढ़ेंगी तो उनके माता पिता उनकी शादी तय कर देंगे। इस समय कोहका फाउंडेशन (Kohka Foundation) 220 बच्चों को पढ़ाने का काम कर रहा है। उनका एक सेंटर तुरिया के स्कूल (school in Turiya village) में चल रहा है जहां पर 150 बच्चे शिक्षा ले रहे हैं। जबकि अम्बाझरी (Ambajhari village) में 70 बच्चे शिक्षा हासिल कर रहे हैं। संजय कहते हैं कि

मेरी कोशिश बच्चों की संख्या पर नहीं बल्कि बच्चों को अच्छी शिक्षा देने पर है। इस कारण हम अपने काम का विस्तार नहीं कर पा रहे हैं। दूसरा यहां पर अंग्रेजी और गणित के अच्छे टीचरों

की कमी बच्चों के विकास में बड़ी बाधा है।

अपनी फंडिंग के बारे में संजय का कहना है कि लाइट ऑफ लाइफ ट्रस्ट (Light of Life Trust) के अलावा उनको रिलायंस कैपिटल (Reliance Capital) और कुछ दूसरी संस्थाएं फंड देती हैं। साथ ही वो क्राउड फंडिंग से भी पैसा जुटाते हैं।

फेसबुक

 Facebook  Twitter  Google+

इस कहानी के बारे में आपकी क्या प्रतिक्रिया है, हमें कमेंट्स कर बताएं। यदि आप भी हमें अपनी कहानी शेयर करना चाहते हैं तो हमें **लिखिए** या **Facebook (@IndiaMantra)**, **Instagram (@IndiaMantra)** और **Twitter (@IndiaMantra)** के जरिये संपर्क कीजिये।

सम्बंधित कहानियाँ:



23 साल की लड़की ने दूसरों का भविष्य सवांरने के लिये छोड़ दी



कैसे 22 साल की लड़की करियर छोड़ बच्चों का भविष्य



अनाथ बच्चों के सपनों को पूरा कर रही हैं चार्टेड अकाउंटेंट मनीषा



उन्होंने छोड़ दी पत्रकारिता और लिखने लगीं दिव्यांग बच्चों का



एनआईटी छात्रों के 'संकल्प' से संवरा सैकड़ों आदिवासी बच्चों



भूखों का पेट भरता है ये फ्रिज



घुमक्कड़ मनु जानता है पहाड़ों को हरा और नदी को साफ रखना



फ्रीलांस कंसल्टेंट अचानक बनी किसान अब सीखा रही है ऑर्गेनिक खेती

JOIN OUR SOCIAL COMMUNITY



India Mantra

2,131 likes

Liked

Contact Us

Follow @IndiaMantra

खबर / विषय खोजें



बहलाती सिखलाती कविता के जरिये दुनियादारी बताती जिज्ञासा



सेनेटरी पैड से सुरक्षा के साथ रोजगार की जुगत
भिड़ा रही है गीता



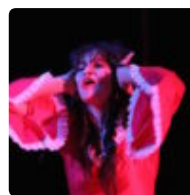
मेघालय का 'द 100 स्टोरी हाउस'



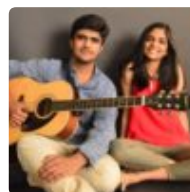
एक डॉक्टर गांव-गांव में क्यों बांट
रही हैं चप्पल?



एक CA का गरीब बच्चों के प्रति
अनोखा प्यार



नाटकों का मंचन सिर्फ नेत्रहीन
लड़कियों द्वारा, हैरत नहीं सच्चाई



इसे पढ़ें, 'आयशा' के फैन हो
जाएंगे आप



तमाम धमकियों के बाद भी वो
पढ़ाने में जुटी हैं गरीब बच्चों को



ज़िंदगी बहुत हसीन है, परेशानी में
ग़लत कदम न उठाएं



मुश्किल में फंसी महिलाओं का
साथी 'पुकार'



वो जुटी हैं मौखिक तलाक़ को खत्म
करने में



23 साल की लड़की ला रही है महिलाओं के
चेहरे पर मुस्कान, खुले में शौच से तौबा



जिस समाज ने पेड़ों को बचाने के लिये जान दी
आज उनके हक की लड़ाई लड़ रहा है एक युवा



स्लम के हजारों बच्चों को स्कूल की दहलीज तक
पहुंचा चुका है 'उमंग फाउंडेशन'



संस्कृत, हमारी पहचान है और वो इसे बुलंदी पर
ले जाना चाहती हैं



[HOME](#) [ABOUT US](#) [CONTACT](#)



Stories That Will Change the Way You Think

Copyright © 2017 India Mantra, All Rights Reserved
[Terms of Service](#) | [Privacy Policy](#)